विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2568, भाद्रपद पूर्णिमा, 18 सितंबर, 2024, वर्ष 54, अंक 03

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यं त्वेव जञ्ञा सदिसो ममन्ति, सीलेन पञ्ञाय सुतेन चापि।
तेनेव मेत्तिं कयिराथ सद्धिं, सुखो हवे सप्पुरिसेन सङ्गमो॥

– जातक पाळि-1, इन्दसमानगोत्तजातकं

– जिसे शील, प्रज्ञा और श्रुत में अपने सदृश जाने, उसी के साथ मैत्री करे। सत्पुरुष का सत्संग सुखदाई होता है।

हुई मिलता फलवती

पुक्कुसाति (3)

गतांक से आगे .....

नगर के बाहर भार्गव कुम्भकार (कुम्हार) का एक छोटा सा मकान। कुम्भकार को बर्तन, भांडे बनाने के लिए बहुत-सी मिट्टी की आवश्यकता होती है, अत: नगर के बाहर जहां ऐसी सुविधा हो, वहीं उसका निवास होना स्वाभाविक है। हम नहीं जानते कि भार्गव इस कुम्भकार का नाम है अथवा गोत्र, जिसके कारण वह इस संबोधन से पुकारा जाता है। हो सकता है जैसे आज कुम्भकार को प्रजापति के नाम से पुकारते हैं, उसी प्रकार उन दिनों भार्गव नाम से पुकारते हों क्योंकि पुरातन साहित्य में हमें एक से अधिक भार्गव कुम्भकारों के उल्लेख मिलते हैं।

जो भी हो, यह भार्गव कुम्हार अत्यंत श्रद्धालु है। साधु-संतों की सेवा टहल और सत्संग में रुचि रखता है। उनकी सुख-सुविधा के लिए अपने घर के समीप एक विश्रामशाला बना रखी है, जो कि कुम्भकारशाला के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें यात्री, साधु-संन्यासी, एक दो दिन के लिए टिकते-ठरहते हैं। कभी भगवान बुद्ध और कभी सारिपुत्र आदि उनके शिष्य भी रैन बसेरे के लिए इस कुम्भकार की विश्रामशाला में रुके हैं। आज भी भगवान बुद्ध सूरज ढलने के बाद इस कुम्भकार के पास आए हैं और उससे पूछते हैं, "भार्गव कुम्भकार, मैं तुम्हारी अतिथिशाला में रात बिताऊं? तुम्हें बोझ तो नहीं लगेगा?"

"नहीं भंते भगवान, मेरे लिए तो यह असीम पुण्य की बात होगी। कुंभकारशाला का कक्ष बहुत बड़ा है। उसमें एक साथ एक से अधिक लोग आराम से टिक सकते हैं। परंतु अभी कुछ देर पहले मैंने एक श्रमण को वहां टिकने की अनुमति दे दी है। उसे पूछ लें। उसे एतराज न हो तो भगवान सुखपूर्वक रहें।"

भगवान कुम्भकारशाला में गये। देखा, वहां फटे चीवर पहने एक श्रमण बैठा है। गौर वर्ण है, उन्नत ललाट है, बड़ी आंखे हैं, लंबी नाक है। सिर और मूंछ दाढ़ी के कटे हुए बाल, दो-दो अंगुल बढ़े हुए हैं। योद्धाओं का-सा चौड़ा सीना है। सबल सुडौल हाथ-पांव हैं। सब मिलाकर बड़ा भव्य व्यक्तित्व है। भगवान उसे देखकर मुसकुराए। उन्होंने पूछा "भिक्षु इस कक्ष में मैं तुम्हारे साथ एक रात गुजार लूं? तुम्हें बोझ तो नहीं लगेगा?"

"नहीं, आयुष्यमान जरा भी नहीं, कुम्भकारशाला का यह कक्ष बहुत बड़ा है। बड़ी खुशी से यहां रात बिताओ। मुझे तो पालथी मारकर बैठने भर का स्थान चाहिए। तुम यहां यथासुख रहो।"

तृण का आसन बिछाकर भगवान एक ओर बैठ गये और ध्यानमग्न हो गये। पूर्वागत भिक्षु भी ध्यान में बैठ गया और शीघ्र ही चौथी ध्यान-समापत्ति में समाधिस्थ हो गया।

शनै: शनै: रात बीतती गयी। रात्रि का प्रथम याम बीता, द्वितीय याम बीता, अब तीसरा बीत रहा था। पूर्णिमा थी। आकाश सारी रात चंद्रप्रभा से प्रभासित रहा। धरती के आंगन पर चांदनी छिटकी रही। खुली खिड़कियों से चांदनी का प्रकाश कक्ष में भी प्रवेश पा रहा था। भगवान बुद्ध और भिक्षु को चंद्र-किरणें स्पर्श कर रही थीं। भगवान तो बोधिरश्मि से स्वयं प्रभास्वर थे ही, भिक्षु का चेहरा भी ध्यान समापत्ति की प्रभा से प्रदीप्त था। चांद की शुभ्र ज्योत्सना उन दोनों के चेहरों को और अधिक उजला कर रही थी। भिक्षु देर तक बिना हिले-डुले अधिष्ठान आसन में बैठा रहा। तीसरे याम के दौरान उसने आँखें खोलीं! भगवान ने उसकी ओर देखा और मुसकुराए। उन्होंने पूछा,

"भिक्षु, तुम किस पर आश्रित होकर गृहत्यागी हुए हो? कौन तुम्हारा शास्ता है, आचार्य है? किसके द्वारा उपदेशित धर्म तुम्हें रुचिकर है?"

भिक्षु ने उत्तर दिया "आयुष्मान् लोक में सम्यक संबुद्ध उत्पन्न हुए हैं, जिनकी कीर्ति चारों ओर फैली है। मैं उन्हीं शाक्यमुनि भगवान गौतम बुद्ध का आश्रय लेकर घर से बेघर हुआ हूं। वही मेरे शास्ता हैं। उन्हीं का उपदेशित धर्म मुझे रुचिकर लगता है।"

भगवान फिर मुसकुराए। उन्होंने पूछा "भिक्षु, क्या तुमने अपने शास्ता को कभी देखा है? क्या देख लो तो पहचान पाओगे?"

"नहीं, आयुष्मान्! नहीं पहचान पाऊंगा। मैंने उन्हें कभी नहीं देखा।"

"इस समय तुम्हारे शास्ता कहां है?"

"यहां आने पर पता चला कि वे श्रावस्ती के जेतवन में विहार कर रहे हैं। रास्ते में मैं जेतवन विहार के सामने से गुजरा, पर तब तो समझता था कि उन्हें मगध में संबोधि मिली है, अत: मगध में ही विहार कर रहे हैं। अब उनसे मिलने के लिए पुन: 45 योजन श्रावस्ती की ओर लौटना होगा।"

भगवान फिर मुसकुराए। उन्होंने अपने बोधिचित्त से देखा कि भिक्षु का आयुष्य बहुत थोड़ा बचा है। सूर्योदय के कुछ समय बाद उसकी शरीर-च्युति हो जायगी। मेरे निमित्त ही यह प्रव्रजित हुआ है। बहुत योग्य पात्र है। अनेक जन्मों की पुण्य पारमिताओं का धनी है। विपश्यना सिखायी जाय तो अभी विमुक्ति की ऊंची अवस्थाएं प्राप्त कर लेगा। अत: उन्होंने बड़े करुण चित्त से कहा,

"तो भिक्षु ध्यान लगाकर सुनो! मैं तुझे धरम देशना देता हूं।"

ऐसा आकर्षण था भगवान की करुणासिक्त वाणी में कि भिक्षु 'ना' न कर सका। उसने कहा, "बहुत ठीक आयुष्मान्!" और दत्तचित्त होकर उनकी कल्याणी वाणी सुनने लगा।

पूर्व जन्मों के अभ्यास के कारण स्वर्णपत्र पर आनापान की साधना का वर्णन मात्र पढ़कर वह स्वत: चौथी ध्यान समापत्ति की अनुभूति तक पहुँच चुका था। भगवान ने अब उसे धातुओं के विभंग को समझाते हुए विपश्यना की गहराइयों में उतारा।

पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश ये पांच भौतिक तत्त्व हैं और विज्ञान, यह एक मानसिक तत्त्व। इन तत्त्वों का समुच्चय ही मनुष्य है। इन छ: को विभाजित करके, इनकी धातु यानी इनके धर्म-स्वभाव को अनुभूतियों के स्तर पर जान लेना धातु-विभंग है। इन छ: तत्त्वों के अतिरिक्त आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा और विज्ञान (मानस) की छ: इंद्रियां और इनके अपने-अपने विषयों के संस्पर्श से उत्पन्न होने वाली सुखद-दु:खद अथवा असुखद-अदु:खद संवेदनाओं की 18 प्रकार की अनुभूतियों में विचरण करते रहने वाले स्वभाव को विभाजित कर-करके देख लेना, इन्हें मैं, मेरा और मेरी आत्मा न मानकर मिथ्या अहं की भ्रम-भ्रांतिजनक मरीचिका से मुक्त होना, मिथ्या मान्यताओं की गुलामी से छुटकारा पाना, यही विपश्यना की विभंग साधना है। इस साधना द्वारा निरंतर अनित्यबोधिनी संप्रज्ञा में सतत अधिष्ठित रहना, यानी स्थितप्रज्ञ बने रहना, इंद्रिय जगत के अनित्य और इंद्रियातीत के नित्य स्वभाव वाली सच्चाइयों को स्वानुभूति से जानकर सत्य में सतत अधिष्ठित रहना, मिथ्या अहंभाव से उत्पन्न राग-द्वेष और मोह जैसे विकारों के त्याग में सतत अधिष्ठित रहना और विकार-विमुक्ति द्वारा प्राप्त चित्त की शांति में अधिष्ठित रहना, यही धातु-विभंग उपदेश के चार प्रमुख उद्देश्य हैं।

भगवान जैसे-जैसे इस उपदेश की बारीकियों को समझाते गये, वैसे-वैसे पुक्कुसाति लोकीय ध्यान को संप्रज्ञान के साथ जोड़कर लोकोत्तर ध्यानों में बदलता गया और अब उसकी समाधि केवल ध्यान-समापत्तियों तक ही सीमित नहीं रही। संप्रज्ञान की विपश्यना द्वारा अधोगति के संपूर्ण संस्कारों का क्षय करके उसने पहले स्रोतापत्ति की निर्वाणिक फल-समापत्ति को अनुभूति पर उतारा और तदनंतर सकदागामी की फल-समापत्ति को।

भगवान समझाए जा रहे थे और साथ-साथ मैत्री धातु, धर्मधातु और निर्वाणधातु से सारे वातावरण को आप्लावित किये जा रहे थे। श्रद्धालु पुक्कुसाति केवल सुनता ही नहीं जा रहा था, भीतर ही भीतर विपश्यना प्रज्ञा द्वारा घनीभूत सच्चाइयों का छेदन-भेदन करता हुआ बाकी बचे कर्म-संस्कारों का उच्छेदन भी करता जा रहा था।

रजनीकांत निशाकर (चंद्रमा) अपनी रजत रश्मियां समेटता हुआ पश्चिमी क्षितिज की ओर अस्त हो रहा था। भुवन भास्कर अपनी स्वर्ण-रश्मियों को विकीर्ण करता हुआ पूर्वी क्षितिज से उदय हो रहा था। इसी समय पुक्कुसाति भगवान की महाकारुणिक धर्मतरंगों का संबल प्राप्त करता हुआ, विपश्यना की सूक्ष्म गहराइयों की ओर अग्रसर हो रहा था। यकायक उसे चौथे ध्यान की समापत्ति के साथ-साथ प्रथम निरोध समापत्ति की निर्वाणिक अनुभूति हुई। वह अनागामी-फल लाभी हुआ।

इस निरोधसमापत्ति से उठा तो कृतज्ञता विभोर हो गया। ऐसी मुक्तिदायिनी विपश्यना भगवान बुद्ध के अतिरिक्त और कोई नहीं सिखा सकता। अवश्य यह भगवान बुद्ध ही हैं। यह विचार मन में आते ही उसके मुँह से हर्ष के उद्गार निकल पड़े।

"अहो! मैंने अपना शास्ता पा लिया, सुगत पा लिया, सम्यक संबुद्ध पा लिया।" यह कहते हुए पुक्कुसाति ने अपना सिर भगवान के चरणों में झुका दिया। फिर दाहिने कंधे को खुला छोड़कर अपने उत्तरासंग को यानी उर्ध्व वस्त्र को बाएं कंधे पर रखते हुए (यह उन दिनों का सम्मान प्रदर्शन था), हाथ जोड़कर बोला,

"भंते भगवान! अनजाने में मुझसे बहुत बड़ा अपराध हुआ। मैं अपनी अज्ञान अवस्था में, मूढ़ अवस्था में आपको पहचान नहीं पाया। इसलिए आपको आयुष्मान् शब्द से संबोधित करके मैंने अत्यंत अकुशल कर्म किया। (पद अथवा उम्र में अपने से छोटों के लिए आयुष्मान् शब्द प्रयुक्त हुआ करता था।) भगवान मेरे इस अपराध को क्षमा करें। भविष्य में मुझसे ऐसी भूल नहीं होगी।"

"भिक्षु अनजाने में की हुई अपनी भूल तुमने स्वीकारी है। इसका उचित प्रतिकार किया है। आर्य धर्म-विनय में यह प्रगति का लक्षण है— जबकि कोई अपनी भूल स्वीकारता है, उसका प्रतिकार करता है और भविष्य में न करने का संकल्प करता है।"

"भगवान, मुझे आप से उपसंपदा मिले।"

"भिक्षु, क्या तुम्हारे पास परिपूर्ण पात्र-चीवर हैं?"

"नहीं भंते, परिपूर्ण नहीं हैं।"

"भिक्षु, अपूर्ण पात्र-चीवर वाले को तथागत उपसंपदा नहीं देते।"

तब आयुष्मान् पुक्कुसाति भगवान के वचन का अभिनंदन कर, आसन से उठा और उनका अभिवादन कर, उनकी प्रदक्षिणा की और पात्र-चीवर की खोज में नगर की ओर चल पड़ा।

सूर्योदय होते ही नगरद्वार खुले। नगर के कुछ एक नागरिक और भिक्षु बाहर आये तो भार्गव कुम्हार की अतिथिशाला में अप्रत्याशित रूप से भगवान को बैठा देखा। उन्होंने भगवान का सादर अभिवादन किया। कुछ लोग दौड़े हुए महाराज बिम्बिसार के पास पहुँचे। वह भी शीघ्रतापूर्वक भगवान की सेवा में आ गया। भगवान को पंचांग प्रणाम कर भार्गव कुम्हार की अतिथिशाला में बैठ गया।

इतने में सूचना आयी कि पात्र-चीवर की खोज में निकला हुआ भिक्षु एक दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त हो गया है।

भगवान ने बताया कि यह व्यक्ति गांधार नरेश था, जो कि मित्र का धर्मसंदेश पाकर, राजपाट त्यागकर प्रव्रजित होने मगध चला आया था। पुक्कुसाति समझदार था। वह परम सत्यान्वेषी था। शुद्ध धर्म को जैसे-जैसे

सुनता गया, वैसे-वैसे स्थूल से सूक्ष्म सत्यों की ओर अग्रसर होता हुआ, मुक्ति की ओर बढ़ता चला गया। धर्म को समझने और धारण करने में उसमें कहीं हेठी नहीं दिखाई दी। कोई अड़ियलपना नहीं दिखाई दिया। आज की रात ही उसने विपश्यना साधना द्वारा अनागामी फल प्राप्त किया, जिससे उसके सारे अवरभागीय संयोजन-बंधन टूट गए। अब वह ओपपातिक ब्रह्मलोक में जन्मा है। वहां विपश्यना करते हुए अर्हत फल प्राप्त कर लेगा और वहीं शरीर त्यागने पर परिनिर्वाणलाभी होकर, समस्त लोकों के भवभ्रमण से सर्वथा विमुक्त हो जायगा।

बिम्बिसार अपने अनदेखे मित्र की मृत्यु के संवाद से दु:खी तो हुआ, पर शीघ्र ही उसका यह दु:ख मोद में पलट गया, जबकि उसने यह सुना कि उसका मित्र अनागामी फल प्राप्त कर मृत्यु को प्राप्त हुआ है। उसे लगा कि उसका धर्म-संदेश बहुत ही योग्य व्यक्ति तक पहुँचा और वह भगवान के और विपश्यना के संपर्क में आकर यथोचित लाभान्वित हुआ।

बिम्बिसार ने भगवान की वाणी सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की और तीन बार साधु, साधु, साधु कहकर उनके चरणों में नमन किया।

सचमुच उसकी धर्म-मैत्री सफल हुई, सार्थक हुई। उसके मित्र का मंगल हुआ, कल्याण हुआ। ऐसा मंगल-कल्याण सबका हो!

कल्याण मित्र,

सत्यनारायण गोयन्का.

– 'विपश्यना' वर्ष 20, बुद्धवर्ष 2535, ज्येष्ठ पूर्णिमा, दि. 26-06-1991, अंक 13 से साभार

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि ***धम्मगिरि के लिए*** निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें:

https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए:

https://schedule.vridhamma.org* एवं *www.dhamma.org

अथवा ***https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN***

अति महत्त्वपूर्ण सूचनाएं

1. सेंट्रल आईवीआर (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पांस) संभाषण नंबर: 022-50505051 आवेदक इस नंबर पर अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर (फॉर्म में उल्लिखित नंबर) से अपनी शिविर पंजीकरण स्थिति की जांच करने, रद्द करने, स्थानांतरित करने या किसी भी केंद्र पर बुक किए गए अपने आवेदन की पुष्टि करने के लिए कॉल कर सकते हैं। वे इस सिस्टम के जरिए केंद्र से संपर्क भी कर सकते हैं। यह भारत के सभी विपश्यना केंद्रों के लिए एक केंद्रीय संपर्क नंबर है।

2. यदि अकेंद्रीय (नान-सेंटर) भावी शिविरों के कार्यक्रम पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजना चाहते हैं तो कृपया अपने समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य (सीएटी) की सहमति-पत्र के साथ भेजें, जबकि स्थापित केंद्रों के कार्यक्रम केंद्रीय आचार्य (सीटी) की सहमति-पत्र के साथ आने चाहिए। इसके बिना हम कोई भी कार्यक्रम पत्रिका में प्रकाशित नहीं कर सकते हैं।

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण धर्म एवं मैत्री- तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ अपने सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं।

Bank Details: 'Global Vipassana Foundation' (GVF),
Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments,
Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064,
Branch- Malad (W). Bank A/c No.- 911010032397802
IFSC No.- UTIB0000062 Swift code: AXIS-INBB062
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057, 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156
Email: ***audits@globalpagoda.org***

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यना विशोधन विन्यास (Vipassana Research Institute=**VRI**) एक ऐसी संस्था है जो साधकों के लिए धर्म संबंधी प्रेरणादायक पाठ्य सामग्री लागत मूल्य पर उपलब्ध कराती है। यहां का सारा साहित्य न्यूनतम कीमत पर उपलब्ध है ताकि अधिक से अधिक साधक इसका व्यावहारिक लाभ उठा सकें। विपश्यना साधना संबंधी अमूल्य साहित्य का हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद एवं शोध करना है। इसके लिए विद्वानों की आवश्यकता है। शोध कार्य मुंबई के इस पते पर होता है:- **'विपश्यना विशोधन विन्यास'**, परियत्ति भवन, विश्व विपशयना पगोडा परिसर, एस्सेल वर्ल्ड के पास, गोराई गांव, बोरीवली पश्चिम, मुंबई- 400 091, महाराष्ट्र, भारत. फोनः कार्या. +9122 50427560, मो. (Whats App) +91 9619234126.

इसके अतिरिक्त VRI हिंदी, अंग्रेजी एवं मराठी की मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से पूज्य गुरुजी के द्वारा हुए पत्राचार, पुराने ज्ञानवर्धक लेख, दोहे, साक्षात्कार, प्रश्नोत्तर आदि के द्वारा प्रेरणाजनक संस्मरणों को प्रकाशित करती है ताकि साधकों की धर्मपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे।

इन सब कार्यों को आगे जारी रखने के लिए साधकों का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। भविष्य में अनेक साधकों के लाभार्थ धर्म की वाणी का प्रकाशन अनवरत चलता रहे, इसमें सहयोग के इच्छुक साधक निम्न पते पर संपर्क करें। इस संस्था में दानियों के लिए सरकार से आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35-(1) (iii) के नियमानुसार 100% आयकर की छूट प्राप्त है। साधक इसका लाभ उठा सकते हैं। **दान के लिए बैंक विवरण इस प्रकार है:—**

विपश्यना विशोधन विन्यास, ऐक्सिस बैंक लि., मालाड (प.)
खाता क्र. 911010004132846; IFSC Code: UTIB0000062
संपर्क- 1. श्री डेरिक पेगाडो - 022-50427512/ 28451204
2. श्री बिपिन मेहता - 022-50427510/ 9920052156
3. ईमेल - audits@globalpagoda.org
4. वेबसाइट- https://www.vridhamma.org/donate-online

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. कु. प्रीति डेढ़िया, संयोजक क्षेत्रीय आचार्या, तमिलनाडु
2. श्री भक्त प्रसाद पौडेल, नेपाल के लिए सहायक आचार्य प्रशिक्षण समन्वयक
3. श्रीमती अंबिका श्रेष्ठ, धम्म विराट, नेपाल के केंद्र-आचार्य की सहायता
4. श्री गंगाराम प्रजापति, धम्म कुटी, रायपुर (छत्तीसगढ़) के केंद्र-आचार्य की सहायता
5. श्री विलास शिंदे, धम्मपठार, अहमदनगर केंद्र के केंद्र-आचार्य

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1-2. श्री दिनेश एवं श्रीमती शोभना शाह, अहमदाबाद, गुज. धम्म का प्रसार
3-4. श्री सज्जन एवं श्रीमती नीरू गोयन्का, (केंद्र-आचार्य धम्म पाटलिपुत्त, पटना)
5. श्री निरंजन सिन्हा, (केंद्र-आचार्य धम्म वेसाली, वैशाली, बिहार)

वरिष्ठ स. आचार्य

1. श्री नरेश पटेल, अहमदाबाद, गुजरात
2-3. श्री केतन एवं श्रीमती जयश्री पटेल, अहमदाबाद, गुजरात
4. श्री आर सी गुप्ता, गुरुग्राम, हरियाणा
5. श्रीमती राजलक्ष्मी सिद्धार्थन करियाल, गुरुग्राम, हरियाणा
6. श्री सतवीर मान, करनाल, हरियाणा
7. श्रीमती नीलम बुलचन्दानी, चेन्नई

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री प्रकाश चंद्र, बेंगलुरू
2. श्री मरिकांती नरसिम्हा राव, हैदराबाद
3. श्रीमती रजिनी कोट्ला, सिकन्दराबाद
4. श्रीमती निर्मला सिलेकर, नागपुर
5. श्रीमती वर्षा सोनकुसरे, नागपुर
6. कु. गंगा के. मूलचंदानी, कच्छ
7. श्री निश्चिंथ जालान, कोलकाता
8. श्री जीतेंद्र यादव, नेपाल
9. श्रीमती प्रमिला डांगोल, नेपाल
10. श्रीमती रेनू कर्ना, नेपाल
11. Mr. Jiesheng XIe, China
12. Mrs. Xiaohong Mo. China

बालशिविर शिक्षक

1. श्री प्रवीण विलास दाते, अहमदनगर
2. श्री शैलेश श्रीकांत सुतार, पुणे
3. कु. अरुणिमा श्रीवास्तव, देहरादून
4. श्री भरतसिंह रतन पावरा, शहादा
5. श्रीमती सारिका प्रीतमसिंग पाटिल, जलगांव
6. श्री प्रदीप ज्ञानेश्वर पाटिल, जलगांव
7. श्री रोशन मोरे, जलगांव
8. श्री तुषार शांताराम धांडे, जलगांव
9. श्री योगेश यशपाल अहिरे, जलगांव
10. श्रीमती सुजल मधुकर भोसले, जलगांव
11. श्री ईश्वरलाल मणिलाल जाधव, जलगांव
12. श्रीमती भारती मदन, नोएडा
13. श्री नरेश कुमार, दिल्ली
14. श्री अनिलभाई सोनाग्रा, जामनगर
15. श्रीमती पूजा मल्होत्रा, हरियाणा
16. श्री कमलेशभाई शामजीभाई झापडिया, राजकोट
17. श्रीमती प्रथना राजेश शीलु, राजकोट
18. Ms. Beatriz Baz, Spain
19. Mr. Daniel Aleksandrov, Bulgaria
20-21. Mr. Vinzenz and Mrs. Florence Luginbuhl, Switzerland
22. Mr. Constantin zaika, Ukraine
23. Miss Lin WANG, Guangdong China
24. Mr. Kimchuy EAM, Cambodia

रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविर:

1. रविवार 29 सितंबर, शरद-पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में ।
2. रविवार 19 जनवरी 2025 को सयाजी ऊ बा खिन एवं माता जी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में शिविर होंगे। ***Eail: oneday@globalpagoda.org Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register***

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*।
संपर्क: 022 50427500 (Board Lines) - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)

Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; Email: oneday@globalpagoda.org

'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or email- *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

पूज्य गुरुजी की 11वीं पुण्य-तिथि

आगामी 29 सितंबर को पूज्य गुरुजी की 11वीं पुण्य-तिथि होगी। इस अवसर पर हम यथासंभव जितनी अधिक साधना कर सकेंगे, वही उनके प्रति हमारी सही श्रद्धांजलि होगी। !! सब का मंगल हो!!

मोबाइल ऐप में नया फीचर

विपश्यना विशोधन विन्यास ने अपने मोबाइल ऐप में एक नया फीचर जोड़ा है, जिसके द्वारा आप भावी शिविरों में भाग लेने के लिए सीधे आवेदन कर सकते हैं। जैसे–

दस-दिवसीय शिविर, दस-दिवसीय एक्जीक्यूटिव शिविर
बच्चों के शिविर तथा तीन दिवसीय शिविर आदि

भारत के सभी केंद्रों में, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, इंडोनेशिया, संयुक्त अरब अमीरात इत्यादि कहीं भी। एक बार आपने आवेदन कर दिया तो उसी ऐप में आप अपने बारे में होने वाली सभी गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे।

आप चाहें तो अपने शिविरों का रेकार्ड भी रख सकते हैं।

वर्तमान में ये नए फीचर्स केवल एंड्रॉयड फोन के लिए उपलब्ध हैं और जल्द ही आईओएस (आईफोन) के लिए उपलब्ध होंगे। डाउनलोड करें ऐप लिंक- Please download the App Link: ***http://vridhamma.org/applink.html***

सूचनाः कृपया ध्यान दें कि इस 'ऐप' में किसी भी भाषा की पत्रिका/Newsletters पढ़ सकते हैं और उन्हें डाउनलोड करके छाप भी सकते हैं।

दोहे धर्म के

देख पात्र की पात्रता, अल्प आयु लघु प्राण।
धर्म सिखाने स्वयं ही, पहुँच गए भगवान॥
उज्वल धातु-विभंग का, दिया धरम उपदेश।
सुनते सुनते कट गए, निज कर्मों के क्लेश॥
अनिल अनल जल भूमि का, हुआ व्योम में मेल।
जुड़ी चित्त की चेतना, चला नियति का खेल॥
प्रकट हुई छह इन्द्रियां, छह खिड़की यह द्वार।
अपने-अपने विषय का, होवे सतत् प्रहार॥
सुखद-दुखद संवेदना, विषय-स्पर्श संयोग।
देख अनित्य स्वभाव को, दूर किए भवरोग॥
अब ना जागे राग ही, अब ना जागे द्वेष।
कामलोक भव चक्र के, बंधन हुए अशेष॥

दूहा धरम रा

पुन्य उदय होवै इसो, बुद्ध समागम होय।
हुयां समागम बुद्ध सूं, धरम समागम होय॥
धरम समागम ज्यूं हुवै, खुलै ग्यान का नैन।
अन्तर को चेतो हुवै, सुण्या धरम का बैन॥
भीतर काया चित को, दीखण लगै प्रपंच।
छँटज्या वादळ मोह का, भरम रवै न रंच॥
तन मन जिभ्या कान का, नैन नाक का द्वार।
हुवै स्पर्स निज विसय को, प्रगटै भव संसार॥
स्पर्स हुयां वेदन हुवै, ह्वै अनित्य को बोध।
तो टूटै संसार क्रम, होवै चित्त विसोध॥
होवै दरसन सच्च को, जागै साचो ग्यान।
तो आपै परगट हुवै, परम सच्च निरवान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877, मोबा. 09423187301, *Email: morolium_jal@yahoo.co.in*
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2568, भाद्रपद पूर्णिमा, 18 सितंबर, 2024, वर्ष 54, अंक 03

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 03 SEPTEMBER, 2024, DATE OF PUBLICATION: 18 SEPTEMBER, 2024

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076,
244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org